MVS FOUNDATION

FREE NOTES

MILITARY STUDIES (374)

CHAPTERWISE NOTES

MILITARY STUDIES

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	**Module 1 : Military Studies**	**L-1:** Importance of Military Studies	13
2	**Module 2 : Structure and Role of the Forces**	**L-6:** Paramilitary Forces	7
3	**Module 5: Warfare and Its Types**	**L-12:** Nuclear Warfare **L-15:** Cyber Warfare	20

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Modules 1,2,5)	Total Chapters : **4**	40
Practical Exam	NA	00
TMA	Tutor Marked Assignment	20
Final Possible Marks		**60 Marks**

विषय - सूची

1	सैन्य अध्ययन का महत्व
2	अर्ध सैनिक बल
3	परमाणु हथियार
4	साईबर युद्ध

1

सैन्य अध्ययन का महत्व

परिचय :

सैन्य अध्ययन का महत्व – यह हमें बताता है कि सैन्य अध्ययन सिर्फ लड़ाई के बारे में नहीं है। यह एक ऐसा विषय है जो हमें सिखाता है कि एक देश अपनी रक्षा कैसे करता है, उसकी सेना कैसे संगठित होती है, और हर नागरिक को अनुशासित क्यों होना चाहिए। यह यह भी बताता है कि युद्ध जीतने के लिए ज़मीन को समझना और एक चतुर योजना बनाना बहुत ज़रूरी है।

सैन्य अध्ययन की परिभाषा : यह सैन्य संगठनों का अध्ययन, किसी देश की सुरक्षा खतरों का विश्लेषण, युद्ध की कला और राष्ट्र की रक्षा में सशस्त्र बलों के उपयोग की पद्धति है।

हमें सैन्य अध्ययन क्यों करना चाहिए? :

सैनिकों के लिए : एक सैनिक को हथियारों के उपयोग में पेशेवर और दक्ष होने के लिए निरंतर प्रशिक्षण और अभ्यास की आवश्यकता होती है।

- **तत्परता :** राष्ट्र की सेनाओं को हर समय युद्ध के लिए तैयार और प्रशिक्षित रहना चाहिए।
- **मनोबल :** अच्छी तरह प्रशिक्षित सैनिक का मनोबल ऊँचा रहता है और वह आत्मविश्वास के साथ युद्ध लड़ता है।
- **नेताओं और नौकरशाहों के लिए :** लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक नेताओं और नौकरशाहों को सैन्य संगठन और राष्ट्रीय सुरक्षा की योजना बनाने के लिए सैन्य शिक्षा की आवश्यकता होती है।

सेना :

- **प्रशिक्षण का महत्व :** एक सेना की पहचान उसके सैनिकों के प्रशिक्षण से होती है; प्रशिक्षित सेना में ही युद्ध जीतने का आत्मविश्वास होता है।
- **सैन्य संगठन का अध्ययन**: प्राचीन काल में सेना पैदल सैनिकों से शुरू हुई और बाद में **चतुरंगबल** (रथ, हाथी, घुड़सवार और पैदल सेना) में विकसित हुई।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा** : इसका विश्लेषण यह निर्धारित करने में मदद करता है कि सेना कितनी बड़ी होनी चाहिए और खतरों से लड़ने के लिए उसे कैसे संगठित किया जाना चाहिए।
- **युद्ध की कला**: युद्ध को दो सेनाओं के बीच लड़ने की गतिविधि के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें जीतने के लिए विभिन्न रणनीतियों और युक्तियों का उपयोग किया जाता है।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न 1. सैन्य अध्ययन को परिभाषित करें और इसके महत्व को बताएं।

उत्तर - सैन्य अध्ययन सैन्य संगठनों, सुरक्षा खतरों और युद्ध की कला का अध्ययन है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नागरिकों को राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाता है और नेताओं को रक्षा के लिए बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है।

प्रश्न 2. 'टैक्टिक्स' (Tactics) और 'स्ट्रेटेजी' (Strategy) के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर - स्ट्रेटेजी युद्ध जीतने के लिए बनाई गई दीर्घकालिक और व्यापक योजना होती है, जिसे उच्च स्तर के कमांडर बनाते हैं। टैक्टिक्स वे विशेष तरीके और तात्कालिक कार्य हैं जिन्हें सैनिक युद्ध के मैदान में किसी विशेष स्थिति में दुश्मन को हराने के लिए अपनाते हैं।

प्रश्न 3. सैन्य अध्ययन का अध्ययन किसे करना चाहिए और क्यों?

उत्तर - छात्रों को रक्षा क्षेत्र में करियर के अवसरों के लिए इस विषय का अध्ययन करना चाहिए। राजनीतिक नेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा बजट के बारे में सही निर्णय लेने के लिए इसे पढ़ना आवश्यक है। इसके अलावा, आम नागरिकों को भी इसे सीखना चाहिए क्योंकि यह अनुशासन और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करता है। यह हर व्यक्ति को हमारे सैनिकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों और शांति बनाए रखने के प्रयासों को समझने में मदद करता है।

प्रश्न 4. सैन्य अभियानों में 'टेर्रेन' (Terrain) का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर - टेरेन का तात्पर्य भूमि की भौतिक विशेषताओं जैसे पहाड़ों, नदियों और जंगलों से है। सैन्य अध्ययन में, टेरेन को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तय करता है कि युद्ध कैसे लड़ा जाएगा। यह कमांडरों को यह तय करने में मदद करता है कि सैनिकों को कहाँ तैनात करना है, भारी मशीनरी को कैसे ले जाना है और दुश्मन से कहाँ छिपना है। टेरेन का सही आकलन सेना को सफल रणनीति बनाने में मदद करता है और रसद की सुचारू आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

प्रश्न 5. युद्ध के दौरान सैनिकों के लिए आचार संहिता क्या है?

उत्तर - सैनिक युद्ध की नैतिकता पर आधारित एक सख्त आचार संहिता का पालन करते हैं। युद्ध के दौरान, उन्हें बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों और विकलांग सैनिकों, जो लड़ने में असमर्थ हैं, उन्हें मारने या नुकसान पहुँचाने से सख्त मना किया जाता है। इसके अलावा, आत्मसमर्पण करने वाले किसी भी दुश्मन सैनिक के साथ मानवीय व्यवहार किया जाना चाहिए। यह संहिता सुनिश्चित करती है कि युद्ध की हिंसा में भी सशस्त्र बलों द्वारा मानवाधिकारों और नैतिक मूल्यों का सम्मान किया जाए।

2

अर्धसैनिक बल

परिचय :

अर्धसैनिक बल भारत के केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) पर केंद्रित है। ये संगठन अर्ध-सैन्यीकृत हैं और मुख्य सेना के साथ मिलकर काम करते हैं। इनका मुख्य कार्य शांति काल में हमारी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करना, अवैध प्रवेश को रोकना और दंगों, चुनावों या प्राकृतिक आपदाओं के दौरान देश के भीतर शांति बनाए रखना है। ये हमारे आंतरिक और सीमा सुरक्षा तंत्र की रीढ़ हैं।

अर्धसैनिक बल की परिभाषा :

- यह एक अर्ध-सैन्य बल है जिसकी संरचना, रणनीति और प्रशिक्षण पेशेवर सेना के समान होता है।
- यह आधिकारिक रूप से राज्य की मुख्य सशस्त्र सेना का हिस्सा नहीं होता है।
- युद्ध के समय कुछ बल (जैसे BSF) सेना के तहत काम करते हैं और इन्फेंट्री (पैदल सेना) जैसे कार्य करते हैं।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल :

- यह भारत का सबसे बड़ा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल है।
- इसका मुख्य कार्य राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को कानून-व्यवस्था बनाए रखने और उग्रवाद विरोध में सहायता करना है।
- RAF (Rapid Action Force) : सांप्रदायिक दंगों से निपटने के लिए CRPF की एक विशेष शाखा है।
- COBRA (Commando Battalion for Resolute Action) : नक्सलियों के खिलाफ जंगल युद्ध के लिए प्रशिक्षित एक विशिष्ट इकाई है।

असम राइफल्स :

- यह भारत का सबसे पुराना अर्धसैनिक बल है, जिसकी स्थापना 1835 में 'कछार लेवी' के रूप में हुई थी।
- यह गृह मंत्रालय (MHA) के नियंत्रण में है, लेकिन इसके अधिकारी भारतीय सेना द्वारा प्रदान किए जाते हैं।
- इसका मुख्य कार्य भारत-म्यांमार सीमा की रखवाली करना और उग्रवाद विरोध अभियान चलाना है।

भारतीय तटरक्षक बल :

- इसकी स्थापना 18 अगस्त 1978 को हुई थी और यह रक्षा मंत्रालय के तहत काम करता है।
- इसका कार्य समुद्री हितों की रक्षा करना, मछुआरों की सहायता करना और तस्करी रोकना है।

सशस्त्र सीमा बल :

- यह वर्तमान में भारत-नेपाल और भारत-भूटान सीमाओं की रखवाली करता है।
- इसका उद्देश्य सीमावर्ती आबादी के बीच सुरक्षा और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न 1. अर्धसैनिक बल क्या है और इसकी भूमिका क्या है?

उत्तर - अर्धसैनिक बल एक अर्ध-सैन्य संगठन है जिसे पेशेवर सेना की तरह प्रशिक्षित और संगठित किया जाता है लेकिन यह राज्य के औपचारिक सशस्त्र बलों का हिस्सा नहीं होता है। इनकी प्राथमिक भूमिका शांति के समय सीमाओं की रखवाली करने और दंगों या विद्रोह के दौरान आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में भारतीय सशस्त्र बलों की सहायता करना है। पूर्ण युद्ध के दौरान, ये बल आमतौर पर पैदल सेना के कार्यों को करने के लिए सेना के नियंत्रण में आ जाते हैं।

प्रश्न 2. भारत के प्रमुख अर्धसैनिक और CAPF बलों के नामों की सूची बनाएं।

उत्तर - भारत में विभिन्न सुरक्षा जरूरतों के लिए कई विशेष बल हैं। प्रमुख बलों में असम राइफल्स (सबसे पुराना बल), विशेष सीमा बल (SFF) और भारतीय तटरक्षक बल शामिल हैं। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPF) के तहत सीमा सुरक्षा बल (BSF), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF), केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF), भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) और सशस्त्र सीमा बल (SSB) आते हैं जो सीमाओं की रक्षा करते हैं।

प्रश्न 3. भारतीय तटरक्षक बल की मुख्य जिम्मेदारियों का वर्णन करें।

उत्तर - भारतीय तटरक्षक बल भारत के समुद्री हितों और समुद्री सीमाओं की रक्षा के लिए जिम्मेदार है। इसके मुख्य कार्यों में तेल टर्मिनलों और कृत्रिम द्वीपों की सुरक्षा, संकट में फंसे मछुआरों को सहायता प्रदान करना और समुद्री पारिस्थितिकी की रक्षा करना शामिल है। वे समुद्री क्षेत्र में तस्करी को रोकने के लिए सीमा शुल्क विभाग के साथ भी काम करते हैं और समुद्र में युद्ध के दौरान राष्ट्रीय रक्षा सुनिश्चित करते हैं, जो उन्हें तटीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है।

प्रश्न 4. विशेष सीमा बल (SFF) क्या है?

उत्तर - विशेष सीमा बल (SFF), जिसे 'एस्टेब्लिशमेंट 22' भी कहा जाता है, कैबिनेट सचिवालय के तहत बनाया गया एक विशेष अर्धसैनिक बल है। इसका नेतृत्व भारतीय सेना के अधिकारी करते हैं और इसका उपयोग मुख्य रूप से गुप्त और रणनीतिक सैन्य अभियानों के लिए किया जाता है। इस बल को मूल रूप से सीमाओं पर संवेदनशील मिशनों को संभालने के लिए बनाया गया था। अपने अनूठे प्रशिक्षण और गुप्त स्वभाव के कारण, यह विशेष उच्च-जोखिम वाले कार्यों के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न 5. शांति और युद्ध के दौरान BSF कैसे कार्य करती है?

उत्तर - शांति के समय, सीमा सुरक्षा बल (BSF) भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की रखवाली करने, तस्करी जैसे सीमा पार अपराधों को रोकने और सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में सुरक्षा की भावना सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है। हालाँकि, युद्ध के दौरान, BSF अपनी भूमिका बदल लेती है और भारतीय सेना के कमान के तहत आ जाती है। यह रक्षा की दूसरी पंक्तियों की रखवाली करके और विशिष्ट क्षेत्रों में पैदल सेना जैसी भूमिकाएँ निभाकर नियमित सेना की सहायता करती है।

3

परमाणु हथियार

परिचय :

"परमाणु हथियार" मानव जाति के लिए ज्ञात सबसे शक्तिशाली हथियारों से संबंधित है। यह परमाणु ऊर्जा के विज्ञान और परमाणु विस्फोटों के कारण होने वाले विशाल विनाश की व्याख्या करता है। यह अध्याय गर्मी और धमाके जैसे तात्कालिक प्रभावों और विकिरण (radiation) के दीर्घकालिक खतरों पर प्रकाश डालता है। यह उन आवश्यक सुरक्षा कदमों को भी सिखाता है जो परमाणु हमले से बचने के लिए व्यक्तियों और समूहों को उठाने चाहिए।

परमाणु विस्फोट की ऊर्जा मात्रा :

यील्ड : यह परमाणु हथियार द्वारा उत्पादित विस्फोटक ऊर्जा की मात्रा है, जिसे TNT के समकक्ष मापा जाता है।

- 1 किलोटन (KT): 1,000 टन TNT के बराबर ऊर्जा।
- 1 मेगाटन (MT): 10 लाख टन TNT के बराबर ऊर्जा।

परमाणु विस्फोट की विशेषताएं :

- अत्यधिक तीव्र चमक।
- आग का गोला।
- तापीय विकिरण।
- दबाव तरंग।
- विद्युत-चुंबकीय प्रभाव।
- मशरूम के आकार का बादल।

परमाणु विस्फोट के प्रभाव :

- **डेज़ल** : तेज रोशनी के कारण अस्थायी दृष्टि हानि।
- **आंखों की क्षति** : रेटिना का जलना, जिससे स्थायी अंध बिंदु (blind spots) बन सकते हैं।

ब्लास्ट और शॉक :

- इमारतों का गिरना और मलबे का उड़ना।
- वाहनों और उपकरणों का पलट जाना।

परमाणु प्रभाव :

परमाणु विस्फोट के समय खतरनाक विकिरण निकलता है, जो तुरंत भी नुकसान पहुँचाता है और बाद में भी लंबे समय तक असर करता है। यह विकिरण हवा, पानी और जमीन को जहरीला बना देता है और इंसान के शरीर पर बुरा प्रभाव डालकर सिरदर्द,

उल्टी, बाल झड़ना जैसी बीमारियाँ पैदा करता है। साथ ही यह इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को भी प्रभावित करता है—कभी उन्हें थोड़ी देर के लिए खराब करता है और कभी पूरी तरह बंद या नष्ट कर देता है।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न 1. परमाणु श्रृंखला अभिक्रिया (Nuclear Chain Reaction) की प्रक्रिया को समझाएं।

उत्तर - परमाणु श्रृंखला अभिक्रिया तब शुरू होती है जब एक न्यूट्रॉन यूरेनियम जैसे भारी परमाणु से टकराता है, जिससे वह टूट जाता है और ऊर्जा के साथ अधिक न्यूट्रॉन छोड़ता है। ये नए न्यूट्रॉन फिर अन्य परमाणुओं से टकराते हैं, जिससे वे भी टूट जाते हैं। यह प्रक्रिया बहुत कम समय में तेजी से दोहराई जाती है, जिससे एक विशाल विस्फोट होता है। नियंत्रित वातावरण में यह प्रतिक्रिया बिजली पैदा करती है, लेकिन बम में यह ऊर्जा का विनाशकारी विस्फोट करती है।

प्रश्न 2. परमाणु विस्फोट के तात्कालिक प्रभाव क्या हैं?

उत्तर - परमाणु विस्फोट के चार मुख्य तात्कालिक प्रभाव होते हैं। पहला 'थर्मल फ्लैश' है, एक अंधा कर देने वाली रोशनी और गर्मी। दूसरा 'फायरबॉल' है जो केंद्र में भीषण आग पैदा करता है। तीसरा 'ब्लास्ट वेव' या शॉकवेव है जो मीलों तक इमारतों को नष्ट कर सकती है। अंत में, 'प्रारंभिक विकिरण' निकलता है, जिसमें गामा किरणों जैसी हानिकारक किरणें होती हैं जो उस क्षेत्र के जीवित प्राणियों को तत्काल बीमार कर सकती हैं या मार सकती हैं।

प्रश्न 3. परमाणु विखंडन (Fission) और परमाणु संलयन (Fusion) के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर - परमाणु विखंडन वह प्रक्रिया है जहाँ यूरेनियम जैसे भारी नाभिक को दो छोटे नाभिकों में तोड़ा जाता है, जिससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा निकलती है। दूसरी ओर, परमाणु संलयन भारी नाभिक बनाने के लिए हाइड्रोजन जैसे दो हल्के नाभिकों का जुड़ना है। संलयन, विखंडन की तुलना में बहुत अधिक ऊर्जा छोड़ता है और यही प्रक्रिया सूर्य को ऊर्जा देती है। जहाँ विखंडन का उपयोग पारंपरिक परमाणु बमों में किया जाता है, वहीं संलयन शक्तिशाली हाइड्रोजन बमों का आधार है।

प्रश्न 4. परमाणु विकिरण के विरुद्ध व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपाय क्या हैं?

उत्तर - रेडियोधर्मी धूल और किरणों से खुद को बचाने के लिए विशेष व्यक्तिगत उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसमें पूरे शरीर को ढकने वाले 'टू-पीस ओवर-गारमेंट' और रेडियोधर्मी कणों को सांस के जरिए अंदर जाने से रोकने के लिए मास्क पहनना शामिल है। त्वचा के संपर्क से बचने के लिए दस्ताने और ओवर-बूट भी पहने जाने चाहिए। ये उपाय सुनिश्चित करते हैं कि रेडियोधर्मी कण मानव शरीर में प्रवेश न करें, जिससे विकिरण बीमारी का खतरा कम हो जाता है।

प्रश्न 5. परमाणु युद्ध के संदर्भ में 'सामूहिक सुरक्षा' की व्याख्या करें।

उत्तर - सामूहिक सुरक्षा से तात्पर्य परमाणु हमले से लोगों के एक बड़े समूह को बचाने के लिए किए गए उपायों से है। इसमें मजबूत भूमिगत आश्रयों का निर्माण शामिल है जो विस्फोट की लहरों और गर्मी को झेल सकें। इन आश्रयों में साफ हवा के लिए विशेष निस्पंदन (filtration) प्रणाली और पर्याप्त भोजन, पानी और दवाओं का भंडार होना चाहिए। लोगों को तब तक इन आश्रयों के अंदर रहना चाहिए जब तक कि बाहर विकिरण का स्तर सुरक्षित न हो जाए।

4
साईबर युद्ध

परिचय :

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में साइबर स्पेस युद्ध का एक नया क्षेत्र बन गया है। इस अध्याय में कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से होने वाले हमलों, उनके प्रकार, हमलावरों की पहचान और देश की डिजिटल सुरक्षा के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों का विवरण दिया गया है। और यह बताया गया है कि कैसे देश एक-दूसरे के डिजिटल सिस्टम को नष्ट करने की कोशिश करते हैं। यह भारत की साइबर सुरक्षा नीतियों और CERT-IN जैसी एजेंसियों के बारे में भी जानकारी प्रदान करता है।

साइबर युद्ध की परिभाषा :

- **साइबर युद्ध** : किसी राष्ट्र-राज्य द्वारा दूसरे राष्ट्र के कंप्यूटरों या नेटवर्क में नुकसान पहुँचाने या बाधा डालने के उद्देश्य से की गई कार्रवाई।
- इसमें **गैर-राज्य अभिनेता** जैसे आतंकवादी समूह, हैक्टिविस्ट और आपराधिक संगठन भी शामिल हो सकते हैं।
- **साइबर अपराध** : वह अपराध जिसमें नुकसान पहुँचाने के लिए कंप्यूटर के उपयोग या ज्ञान की आवश्यकता होती है।
- **साइबर सुरक्षा** : अपनी सूचना और सूचना प्रणाली की रक्षा के लिए नीतियों और प्रक्रियाओं का विकास।

खतरे के प्रकार :+

- **साइबर हमले :** वे घुसपैठ जिनमें तत्काल नुकसान या व्यवधान पहुँचाना मुख्य चिंता होती है।
- **साइबर जासूसी :** गुप्त जानकारी प्राप्त करने के लिए की गई घुसपैठ।
- **साइबर तोड़फोड़ :** सैन्य प्रणालियों, पावर ग्रिड, जल आपूर्ति या परिवहन जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में बाधा डालना।
- **साइबर प्रचार :** सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके जनमत को प्रभावित करना और मनोवैज्ञानिक युद्ध लड़ना।

साइबर हमलावर :

- **इनसाइडर :** संगठन का कोई असंतुष्ट कर्मचारी जो संवेदनशील डेटा चोरी या नष्ट कर सकता है।
- **आतंकवादी :** जो सरकारी संचालन को ठप करने या जनता को डराने के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

CERT और राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति :

- **CERT-In (2004)**: भारत में साइबर हमलों को विफल करने के लिए संकट प्रबंधन समन्वय हेतु नामित नोडल एजेंसी।
- **NCIIPC** : ऊर्जा, परिवहन, बैंकिंग और रक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के महत्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढांचे की रक्षा के लिए बनाया गया उपखंड।

- **राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013**: साइबर स्पेस में सूचना बुनियादी ढांचे की सुरक्षा, कमजोरियों को कम करने और साइबर खतरों का जवाब देने की क्षमता बनाने के लिए एक रूपरेखा।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न 1. साइबर युद्ध को परिभाषित करें और इसके उद्देश्यों की व्याख्या करें।

उत्तर - साइबर युद्ध रणनीतिक उद्देश्यों के लिए दुश्मन देश के सूचना तंत्र में सेंध लगाने और उसे बाधित करने या नुकसान पहुँचाने के लिए कंप्यूटर तकनीक का उपयोग है। इसके मुख्य उद्देश्यों में संचार नेटवर्क को बाधित करना, संवेदनशील डेटा को नष्ट करना और पावर ग्रिड या बैंकिंग सिस्टम जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को ठप करना शामिल है। इन प्रणालियों पर हमला करके, एक राष्ट्र एक भी गोली चलाए बिना अपने दुश्मन को कमजोर कर सकता है।

प्रश्न 2. साइबर खतरों के चार मुख्य प्रकार क्या हैं?

उत्तर - साइबर खतरों को चार प्रकारों में बांटा गया है।

(1) 'साइबर हमले' में नुकसान पहुँचाने के लिए सिस्टम की हैकिंग शामिल है।

(2) 'साइबर जासूसी' का अर्थ है जासूसी करना और गुप्त सरकारी या सैन्य डेटा चुराना।

(3) 'साइबर तोड़फोड़' में सॉफ्टवेयर का उपयोग करके बुनियादी ढांचे को नष्ट करना शामिल है।

(4) 'साइबर प्रचार' जनता की राय को प्रभावित करने या दुश्मन राष्ट्र के नागरिकों का मनोबल गिराने के लिए सोशल मीडिया पर फर्जी खबरें फैलाने का काम है।

प्रश्न 3. 'हैकर्स' और 'क्रैकर्स' के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर - हैकर्स और क्रैकर्स दोनों कंप्यूटर सिस्टम तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करते हैं, लेकिन उनके इरादे अलग होते हैं। हैकर आम तौर पर वह व्यक्ति होता है जो कमियों को खोजने या सुरक्षा में सुधार के लिए सिस्टम तक पहुंच प्राप्त करता है। हालाँकि, क्रैकर एक दुर्भावनापूर्ण उपयोगकर्ता है जो विशेष रूप से संवेदनशील जानकारी चुराने, धोखाधड़ी करने या नेटवर्क को गंभीर नुकसान पहुँचाने के लिए सिस्टम में सेंध लगाता है। क्रैकर्स को हमेशा अपराधी माना जाता है क्योंकि उनका इरादा नुकसान पहुँचाना होता है।

प्रश्न 4. भारत के साइबर स्पेस की सुरक्षा में CERT-In की क्या भूमिका है?

उत्तर - इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (CERT-In) कंप्यूटर सुरक्षा घटनाओं पर कार्रवाई करने के लिए राष्ट्रीय नोडल एजेंसी है। इसकी भूमिका साइबर हमलों पर जानकारी एकत्र करना, संभावित खतरों के बारे में चेतावनी देना और हमला होने पर उपचारात्मक उपायों का समन्वय करना है। यह भारत के महत्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढांचे की रक्षा के लिए काम करता है और सरकारी और निजी संगठनों को अपने नेटवर्क को हैकर्स और वायरस से सुरक्षित करने के निर्देश देता है।

प्रश्न 5. 'साइबर तोड़फोड़' और 'साइबर प्रचार' की अवधारणा को समझाएं।

उत्तर - साइबर तोड़फोड़ किसी राज्य के भौतिक बुनियादी ढांचे, जैसे पावर प्लांट या जल आपूर्ति प्रणाली को नष्ट करने के लिए सॉफ्टवेयर का उपयोग है। दूसरी ओर, साइबर प्रचार में पक्षपाती जानकारी, अफवाहें या फर्जी खबरें फैलाने के लिए इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करना शामिल है। प्रचार का लक्ष्य जनता के विचारों को प्रभावित करना, संकट के दौरान भ्रम पैदा करना या विपक्षी सरकार की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाना है।